

Programme: M.A. (Konkani)

Course Code: KKC - 303

Number of Credits: 04

Title of the Course: कोंकणीचो भासविज्ञानीक अभ्यास

Linguistic Study of Konkani

Effective from AY: 2018-19

Prerequisites for the course:	विद्यार्थ्यांक मौखीक कोंकणीचें गिन्यान आसचें	
Objective:	1.विद्यार्थ्यांक भासविज्ञानाची मुळावी वळख जावची आनी कोंकणीचो भासविज्ञानीक अभ्यास करपाची नदर मेळची. 2.कोंकणी भासविज्ञानीक मळा वयल्या आदल्या वावराची पडटाळणी, भाशीक/बोलयांच्या खाशेलेपणांची पुनर्मांडणी.	
		वरां
Content:	<b>1. भास आनी भासविज्ञान</b>	10
	भास म्हणल्यार कितें: भाशेचीं मुळावीं खाशेलेपणां	
	भासविज्ञान म्हणल्यार कितें भासविज्ञान आनी पारंपरीक व्याकरण, भासविज्ञानाच्या आर्विल्ल्या इतिहासाची उडटी वळख	
	भासविज्ञानाचो वापर	
	<b>2. भासविज्ञानाचीं मुखेल आंगां</b>	
	<b>स्वनविज्ञान</b> 'नाद' आनी 'स्वन', स्वन निर्मणेची प्रक्रिया; स्वर आनी व्यंजन: उच्चारण आनी वर्णन; अक्षर	30
	<b>अर्थविज्ञान</b> (अर्थ म्हणल्यार कितें; अर्थाच्यो सात तरा; उतरां भितरलीं नातीं; घटक विस्कटावणी)	
	<b>व्याकरण-विचार</b> - <u>स्वनीम-विचार</u> (स्वनीम, स्वन, वांगडी-स्वन) - <u>पद-विचार</u> (रुपीम, रुपिका, वांगडी-रुपिका; उतर घडणुकेच्यो प्रक्रिया (Inflection आनी Derivation); उतराचे बांदावळीक धरून भासांचें वर्गीकरण - <u>वाक्य-विचार</u> (कोंकणी वाक्यांत उतरांचो सभावीक क्रम: कोंकणी SOV भास; क्रियापद नाशिल्लीं वाक्यां)	
	<b>3. भासविज्ञानाचे हेर फांटे - उडटी नदर</b> इतिहासीक भासविज्ञान (भास-बदल);समाजभासविज्ञान (समाजभासविज्ञान आनी भाशेचें समाजशास्त्र);मनोविज्ञान;मानसभासविज्ञान;बोलीविज्ञान;कम्प्यु	4

	टर भासविज्ञान;अणकारविज्ञान, बी.	
	<b>4. कांय भासविज्ञानीक मुद्द्यांची विस्कटावणी</b> 'व्यक्ती-बोली', 'आवय-भास', 'भाशीक-समाज'; भास आनी लिपी; भाशे-कूळ (कोंकणीचें भाशे कूळ); भाशीक वाठार	<b>4</b>
	वट्ट	<b>48</b>
Pedagogy	ब्याख्यानां/tutorials/lab sessions/e-sources/स्वाध्याय/सादरीकरण	
References/Reading	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. सरदेसाय, माधवी. <i>भासाभास</i>. प्रियोळ: जाग प्रकाशन, १९९३.</li> <li>2. गांवकार, भालचंद्र. <i>भाशाविज्ञान</i>. फोंडें, गोंय: मित्र प्रकाशन, १९९३.</li> <li>3. वेरेंकार, श्याम आनी हेर. (संपा.) <i>कोंकणी भास, साहित्य आनी संस्कृताय</i>. विद्यानगर, मडगांव. 403601.: कोंकणी भाशा मंडळ, मार्च 2003. (लेख: १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, १२, १३, १४)</li> <li>4. गोंयबाब, शणै. <i>कोंकणीची व्याकरणी बांदावळ - मुंबय: गोमंतक छापखानो, १९४९.</i></li> <li>5. Katre, S.M. <i>The Formation of Konkani</i>. Deccan College, 1966.</li> <li>6. Almeida, Mathew. A <i>Description of Konkani</i>. T.S.K.K., 1989.</li> <li>7. Robins, R.H. <i>General Linguistics: An Introductory Survey</i>. Longman (1964) 1980.</li> <li>8. गोविलकर, लीला. <i>वर्णनात्मक भाषाविज्ञान</i>. पुणे: आरती प्रकाशन, 1992.</li> <li>9. मालशे, मिलिंद. <i>आधुनिक भाषाविज्ञान: सिध्दांत आणि उपयोजन</i>, लोकवांगमय गृह, १९९५.</li> <li>10. तिवारी, भोलानाथ. <i>भाषाविज्ञान</i>, किताब महल, (१९५१) १९९१.</li> <li>11. सिंह, तिलक. <i>नविन भाषाविज्ञान</i>, नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान, १९८५.</li> </ol>	
Learning Outcomes:	<ol style="list-style-type: none"> <li>1. कोंकणी भाशेंतलीं स्वनिमां, रुपिमां, वाक्याचे घटक हांचे विशीं विद्यार्थांक गिन्यान मेळटा.</li> <li>2. कोंकणी भासविज्ञानीक मळा वयल्या संशोधन सुवातींची जाण जाता; भासविज्ञानीक मळार वावर करपाची उत्सुकताय निर्माण जाता</li> </ol>	